04 सितंबर 13

सेवा में,
श्रीमती चंद्रेश कुमारी कटोच,
केंद्रीय संस्कृति मंत्री,
भारत सरकार,
नई दिल्ली.

विषय : ताजमहल को पर्यटन सीजन नवंबर से फरवरी तक रात्रि में कृतिम रोशनी से प्रकाशित करने हेतु।

माननीय महोदय,

रुहानी इश्क की अजीम इमारत अपने सौंदर्य के लिए विश्वविख्यात है। पर्यटन के विकास हेतु ताजमहल को रात में देखने की इच्छा शाहजहां के समय से रही है। जाहिर है इक्कीसवीं शताब्दी में सिर्फ चांदनी के इंतजार में नहीं रहा जा सकता। पहले भी एक बार ताज पर रोशनी की गई थी। तब दुनियाभर के पर्यटकों ने उसे सराहा था। बाद में बारिश के मौसम में होने वाले कीट-पतंगों से निकलने वाले मल-मूत्र से ताज के गंदा होने की बात कही गई थी। इस आधार पर हमेशा के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने कृतिम रोशनी पर रोक लगा दी थी।

एक इवेंट मैनेजर वैंकट वर्धन का कहना है कि सूर्य की रोशनी कृतिम रोशनी के मुकाबले 28000 गुना तेज होती है, जिसे ताज पिछले चार सौ साल से झेल रहा है। इतने समय में भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कृतिम रोशनी इतनी हल्की होती है कि उससे नुकसान होने की संभावना नगण्य है।

अभी तक हुए अध्ययनों से जो तथ्य सामने आया है वह यह है कि रोशनी पैदा होने वाले स्थान पर कीट-पतंगे ज्यादा आते हैं, बाकी स्थान में नाम-मात्र के होते हैं। ऐसा किसी भी घर या ऑफिस में देखा जा सकता है कि ट्यूबलाइट, सीएफएल या बल्व के आसपास ज्यादा कीट-पतंगे आदि होते हैं, बाकी पूरे कमरे में नाम-मात्र के कीट-पतंगे आदि होते है। जिस मात्रा में कीट-पतंगे कमरे के अन्य हिस्सों में होते हैं, लगभग उस मात्रा में अंधेरे में भी होते हैं। यानी कीट-पतंगे

रोशनी से नहीं बल्कि रोशनी पैदा करने वाले पाइंट पर निकलने वाली गैस और विकीरण से आकर्षित होते हैं।

इस परिपेक्ष्य में कहा जा सकता है कि अगर चार सर्च लाइट एक मेहताब बाग से, दूसरी मजनूं के टीले से, तीसरी ताजगंज के किसी ऊंची छत से और चौथी ताज खेमा आदि से डाली जाए तो ताज भी प्रकाशित हो जाएगा और कीट-पतंगे आदि की समस्या भी आने की संभावना काफी कम हैं। ताज में पर्यटकों की भीड़ को ज्यादा समय के लिए खोलकर